शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 19-20 मार्च 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

'राग दरबारी' उपन्यास में ग्रामीण जीवन की विसंगतियाँ

डॉ.अर्चना चतुर्वेदी
विभागाध्यक्ष (हिन्दी)
श्री क्लाथ मार्केट इन्स्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

भारत की आजादी के बाद यह सपना देखा गया कि इस आजादी में सभी की बराबर की हिस्सेदारी होगी। विकास की योजनाओं को बनते देख कर देशवासियों का दिल कुलांचे भर रहा था । आजादी की आग में तपे हुए नेताओं के मार्गदर्शन में देश विकास पथ पर आगे बढ़ चला। साहित्यकारों ने भी इसमें अपना योदान दिया। सुनहरे सपनों को पंख लग गए। आजादी आन्दोलन में जिन मूल्यों की स्थापना की गयी थी, वैसा देश बनाने के लिए सभी प्राणपण से जुट गए। लेकिन आजादी के दस-पन्द्रह सालों बाद जब पीछे देखा तो, पैरों तले जमीन खिसक गयी। साहित्यकारों ने जब अपना कैमरा गाँवों की तरफ घुमाया तो उनका हृदय चीत्कार कर उठा। ऐसे ही मोहभंग का चित्रण श्रीलाल शुक्ल ने उपन्यास 'रागदरबारी' में किया है। प्रस्तुत शोध पत्र में ग्रामीण जीवन की विसंगतियों पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

भारत जैसे कृषि प्रधान देश में जहाँ आधी से अधिक जनसंख्या गाँवों में रहती है। अतः ग्रामीण परिवेश का अध्ययन आवश्यक हो जाता है। हिंदी साहित्य में उपन्यास विधा का वास्तविक विकास मुंशी प्रेमचंद से माना जाता है । इसके पूर्व उपन्यास तो बहुत लिखे गए, परन्तु वे समाज पर अपनी छाप छोड़ने में असमर्थ थे। प्रेमचंद के अनेक उपन्यासों में गाँव जीवंत हो उठा है । इस युग के उपन्यासों में ग्रामीण जीवन के सामाजिक पक्ष का चित्रण हुआ है। छुआछूत , मूल्यहीनता, अनैतिक यौन सम्बन्ध, ग्रामीणों का परस्पर द्वेष, छलकपट, जुआखोरी, आदि ही ग्रामीण उपन्यासों की पृष्ठभूमि हुआ करती है। प्रेमचंद युगीन उपन्यासों में इन समस्याओं के प्रति विरोध का स्वर सुनाई पड़ता है। छठवे दशक के उपन्यासों में ग्रामीण जीवन को लक्षित कर उपन्यास लिखे गये। इस युग में नागार्जुन , फणीश्वरनाथ रेणु, भैरवप्रसाद गुप्त, श्री लाल शुक्ल, उदय शंकर भट्ट, रामदरश मिश्र आदि ने ग्रामीण जीवन पर उपन्यास लिखे हैं। इन सभी उपन्यासों में आम ग्रामीण जीवन का उल्लेख है। गाँवों में व्याप्त छुआछुत, कुरीतियों, भ्रष्टाचार, बाल अपराध, आदि का चिन्तन दिखायी देता है। श्रीलाल शुक्ल के 'राग दरबारी' उपन्यास में स्वतंत्र भारतके विकृत और पतनोन्मुख गाँव का स्वरूप बन कर हमारे सामने आता है। 'शिवपालगंज' गाँव नगर से कुछ दूर बसा हुआ गाँव है, जहाँ सरकार की योजनाओं का प्रभाव नहीं के बराबर दिखायी देता है।

राग दरबारी और ग्रामीण जीवन

निहीत स्वार्थ के वशीभूत वहाँ की जिन्दगी प्रगति एवं विकास की वास्तविकता से दूर अवांछनीय तत्वों के आघातों से जूझ रही है। गाँव की पंचायत, विद्यालय की प्रबंध समिति और को - आपरेटिव सोसायटी के सूत्रधार वैद्यजी उस राजनैतिक संस्कृति का प्रतीक हैं , जो प्रजातंत्र

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

एंव लोकतंत्र के नाम पर हमारे चारों ओर फलफूल रही है। ग्रामीण जीवन की सड़ी गली अभिव्यक्ति इस उपन्यास में पूरी तरह व्यक्त हुई है। शिवपाल गंज गाँव में समाज में व्याप्त विसंगतियों, कटुता तथा कुरूपता को लेखक ने यथासंभव उद्घाटित किया है। उपन्यास के अध्ययन से ग्रामीण अंचल के शिक्षा क्षेत्र में व्याप्त अनु शासनहीनता अराजकता तथा विकृतियों का वर्णन किया गया है।

"शिवपाल गंज में स्थित 'छंगामल इण्टर कालेज' ग्रामीण जीवन के यथार्थ को प्रस्तुत करने में पूरी तरह कामयाब रहा है। विद्यालय भवन का नक्षा देखिए - "दो बड़े और छोटे कमरे , तीन ओर दिवारों पर छप्पर डाल कर बना अस्तबल , कुछ दूर पक्की ईंटों पर टिन डाल कर कमरे की गुमटी .....बरगद के नीचे कब्र जैसा चबूतरा.....सबसे पिछवाड़े तीन चार एकड़ का उसर। इस इमारत के आधार पर कहा जा सकता है वह शांति निकेतन से चार कदम आगे है। बिजली, नल का पानी पक्का फर्श, सैनेटरी फिटिंग, कुछ भी नहीं था।"1

छात्रों का समूह भी वहाँ विद्याध्यन की बजाय , खेलकूद फिल्मी पुस्तकें पढ़ने , मारपीट करने में अधिक रूचि रखता है। उसका उद्दे श्य विद्यालय आने पर शिक्षा प्राप्त करने के स्थान पर सरकारी योजनाओं द्वारा प्रदत्त अनुदान प्राप्त करना है। "अध्ययन कक्ष की खिड़िकयों से सड़क का दृश्य देखा जा सकता था , जिस पर प्रायः बैलगाड़ियाँ धूल उड़ाते हुए चलती थीं और छात्र बैंचों पर बैठे-बैठे गाड़ीवान तथा शरारती लड़कों के बीच गाली-गलौच, खींचतान का नाटक देख सकते हैं। विद्यालय का शिक्षक भी पढाता कम है , इधर-उधर की बातें अधिक करता है। उसका ध्यान विषय पढ़ाने के स्थान पर अपनी आटा चक्की पर अधिक है। अचानक भक-भक की आवाज होने लगी। मास्टर मोतीराम की चक्की चल रही थी। यह उसी की आवाज थी। 'अच्छा नेता जैसे सिर्फ आत्मा की सुनता है और कुछ नहीं सुन पाता वही मास्टर मोतीराम के साथ हुआ। उन्होंने कुछ भी नहीं सुना, सिर्फ भक-भक सुना।"2

आजादी के इतने वर्षों के पश्चात् आज भी हमारे गाँव की कमो बेश यही दशा दिखायी देती है। सामूहिक नकल, रिश्वत देकर अंक बढ़वाना, परीक्षा पुस्तिकाओं में हेर -फेर होना आम बात है। परिणामतः आज शिक्षकों को समाज में वह स्थान प्राप्त नहीं है, जो उन्हें मिलना चाहिए। आजादी आन्दोलन में साफाई को रचनात्मक कार्यक्रमों में शामिल किया गया। सफाई के प्रति अज्ञानता ने अनेक बार महामारी का रूप धारण किया और अनेक व्यक्तियों को जान से हाथ धोना पड़ा। गाँव के लोग साफ सफाई की आदतों से अनभिज्ञ हैं। गाँव में सर्वत्र गंदगी व्याप्त है। गाँवों में शौचालयों की पर्याप्त व्यवस्था दिखाई नहीं देती, लोग खुले में शौच जाते हैं। जगह-जगह मल मूत्र तथा गंदगी का ढेर दिखायी देता है। "धुंधलके सड़क के दोनों ओर कुछ गठरियों सी रखीं हुयी नजर आयीं , ये गाँव की औरतें थीं जो कतार बाँध कर बैठी हुयी थीं। वे इत्मीनान से बातचीत करते हुए वायु सेवन कर रही थीं। लगे हाथ मल मूत्र का विसर्जन भी।"3

"गाँव के तालाब एवं पोखर भी साफ सफाई के आभाव में मच्छर पैदा कर गाँव वालों को बीमार करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। गाँव के किनारे एक छोटा तालाब था। गंदा कीचड़ से भरापूरा .....घोड़े, गधे, कुत्ते, सुअर, कीड़े मकौड़े और मच्छर वहाँ करोड़ों की संख्या में पनप रहे थे।"4

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

उपन्यास में वर्णित गाँव के दृश्य आज भी गाँव में सजीव होते दिखाई देते हैं। आज भी शिक्षा के अभाव में गाँव में गंदगी का आलम देखने को मिलता है। शिवपाल गंज में 10-11 वर्ष की अवस्था से होकर बुजुर्ग अवस्था तक के लोग विविध व्यसनों में लिप्त होकर अपना स्वास्थ्य , धन और पारिवारिक सुख नष्ट करते रहते हैं। "रामदीन की कमरखेड़ी के द्वार पर भांग घुटती है और जुंआ खेला जाता है। लोग अपने काम - काज छोड़कर इन व्यसनों में अपना वक्त और धन बर्बाद करते हैं। वैद्य जी और भ्रष्ट दरबारी अपनी राजनीति का शिकार उन्हीं लोगों को बनाते हैं।"5

राग दरबारी में मेले का वर्णन , मंदिर का वर्णन, मैदान आदि का वर्णन ग्रामीण संस्कृति का परिचय कराने के लिए नहीं अपितु ग्रामीण जीवन की फूहड़ता तथा जलालत को प्रस्तुत करने के लिए किया गया है , जिसमें पाठक को सौंदर्य के स्थान पर यर्थाथ की अनुभूति कराता है। आज के गाँव नगर के शोर-शराबे से मुक्त शांत जीवन व्यतीत करने के स्थान नहीं रह गये हैं। आम सहयोग एवं प्रेम के स्थान पर कटुता , वैमनस्य, ईर्ष्या-द्वेष की भावना बढ़ गयी है। गाँवों में थाना है, तहसील है और न्याय पंचायतें भी हैं। पर न तो से संस्थाएं अपना दायित्व ठीक से वहन कर पा रही हैं और न ही कर्तव्य के प्रति इतनी निष्ठावान हैं। उनके पास संसाधनों की कमी के साथ वे राजनीतिक दलों के बोझ तले इतनी दबी हैं कि ईमानदार कर्मचारी चाहे तो भी अपने कार्य नहीं कर सकता। सुरक्षा व्यपस्था की तरह न्याय व्यवस्था भी बेहाल है। कुम्हार और उसके बेटे के झगड़े का निपटारा करने के लिए न्याय पंचायत बैठती है। इस पंचायत के चपरासी से लेकर, पंच और अपराधी अनपढ़ और निकम्मे हैं, पंच न पढ़ना लिखना जानते हैं न उन्हें प्रतिष्ठा का ध्यान है। मुलजिम छोटे पहलवान सरपंच को सीधे गालियाँ देता है और धमका कर फैसला अपने पक्ष में करवाने का प्रयास करता है। चाहे यातायात पुलिस के कर्मचारियों द्वारा ट्रक चैकिंग का दृश्य हो, या मेले में पुजारी का आचरण या खोमचे वाले के साथ पहलवान के दृश्य का चित्रण लेखक ने पूरी ईमानदारी बरती है।

निष्कर्ष

'रागदरबारी' उपन्यास में लेखक श्रीलाल शुक्ल का उद्देश्य ग्रामीण समाज में व्याप्त विसंगतियों और कुरूपताओं को प्रस्तुत करना था और पाठकों का ध्यान आकृष्ट करना था। अतः उसी उद्दे श्य की पूर्ति के लिये परिवेशगत चित्रण को महत्व दिया। परिवेश के विभिन्न दृश्य चलचित्र की भांति आते हैं और पाठक को झकझोर कर हट जाते हैं। यह क्रम निरन्तर चलता है। प्रत्येक बिंब अंकित होकर अपनी छाप छोड़ जाता है।

आजादी के इतने वर्षों बाद भी उपन्यास में व्यक्त परिवे श पूर्ण रूप से साकार होता हुआ दिखायी देता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेन्द्र

2. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास एवं ग्राम चेतना , डॉ. ज्ञानचंद गुप्त

3. हिन्दी उपन्यास में चित्रित ग्रामीण जीवन , डॉ. तरन्नुम बानो

4. रागदरबारी उपन्यास, पृ. क्र. 1-16,2-17, 3-20, 4-22, 5-34